



आर्य वन्दना

मूल्य ९ रूपये



हिमाचल प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

महर्षि दयानन्द अमृत वचन

पण्डित श्री लेख राम जी के हृदय में महाराज जी के दर्शनों की तीव्र लालसा उत्पन्न हो आई। वे कुछ काल के लिए अपने सारे काम काज छोड़कर, पंजाब से अजमेर जा पहुंचे। ज्येष्ठ बदी ४ सं० १९३८ प्रातःकाल श्री सेवा में उपस्थित हुए। उन्होंने भक्तिभाव से नम्रीभूत होकर, श्री चरणों में विनीत नमस्ते निवेदन किया। उनके प्रेम रस से रसीले, विमल लोचनों, मधुर मुखमण्डल को, शोभाशाली विशान ललाट को और पतित पावनी परम पवित्र आकृति का अवलोकन कर, मोहियाल वंश के सुवीर सुपूत को अतिशय प्रसन्नता उपलब्ध हुई। वे मार्ग की सारी थकान तत्काल भूल गये। वे अतृप्त लोचनों से, अति तृष्णा के साथ, स्वामीजी के सुन्दर स्वरूप को देखने लगे।

पण्डित जी ने बद्धान्जलि होकर पूछा कि भगवन्! आकाश और ब्रह्म दोनों पदार्थ व्यापक हैं। दोनों एक स्थान में एकत्र होकर क्यों नहीं रह सकते हैं ?

महाराज ने एक पास पड़ा पत्थर उठाकर पूछा कि इसमें अग्नि व्यापक है वा नहीं ? उन्होंने कहा कि हाँ अवश्यमेव है फिर उन्होंने उसी पाषाणखंड में वायु, जल, मृत्तिका, आकाश और परमात्मा की व्यापकता पूछी। पण्डितजी ने सबकी व्यापकता स्वीकार कर ली। तब स्वामीजी ने कहा, “भद्र! आपने समझ लिया कि एक पत्थर में सब पदार्थ व्याप्त हो रहे हैं। इस व्यापकता का सरल सिद्धांत यह है जो पदार्थ जिससे सूक्ष्म होता है वह उसमें व्याप्त हो सकता है। परमात्मादेव परम सूक्ष्म है। इसलिए से सब पदार्थों में परिपूर्ण हो रहे हैं।”

—दयानन्द प्रकाश

कामना

उस वेद के उपदेश का, सर्वत्र ही प्रस्ताव हो,
सौहार्द और मतैक्य हो, अविरोध मन का भाव हो।
सब इष्ट फल पावें परस्पर प्रेम रश्मिकर सर्वदा,
निज यज्ञ भाव समानता से देव लेते हैं यथा॥

धूप उगे, फसलें फूलें, अक्षय सुख का भण्डार हो,
जलें निरंतर दीप, नित्य ही दीपों का त्यौहार हो।

—गुप्त जी

—माथुर जी

आर्य वन्दना परिवार की ओर से पाठकों को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं।
यह अंक आर्य वन्दना कोष के सौजन्य से प्रकाशित किया गया।

अंक : १११वां

विक्रमी सम्वत् २०७३

सृष्टि सम्वत् १९६०८५३११७

नवम्बर २०१६

‘आर्य वन्दना’ कार्यभार मुक्ति-पत्र

सितम्बर २००७ को स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज ने मण्डी में हुई बैठक में मुझे आर्यवन्दना का कार्यभार सम्भालने का आदेश दिया। मैंने स्वामी जी के आदेश को शिरोधार्य करते हुए हर मास आर्य वन्दना का अंक प्रकाशित किया और अब तक इस अंक को मिलाकर आर्यवन्दना के १११ अंक प्रकाशित होते रहे हैं और उसमें किसी भी प्रकार की ढील नहीं दी गई। हिमाचल प्रदेश के समस्त आर्यजनों का मैं आभारी हूँ कि उनके सहयोग से यह पत्रिका प्रकाशित होती रही। सभा प्रधान और सभा मन्त्री के आदेशानुसार मैं समस्त आर्यवन्दना का कार्यभार श्री श्रवण कुमार अध्यक्ष प्रदेश आर्यवीर दल को सौंप रहा हूँ। मैं समस्त आर्यजनों का हृदय से आभार प्रकट करता हूँ और आगामी अंक महामन्त्री और प्रधान जी प्रकाशित करेंगे। सितम्बर २००७ से नवम्बर २०१६ तक यह अंक हर मास प्रकाशित होता रहा है और उसकी प्रतिलिपि भी सुरक्षित रखी गई है। मैं आर्यजनता का आभारी रहूँगा क्योंकि उनके प्रेम और त्याग से आर्यवन्दना का अंक प्रकाशित होता रहा है। इसमें जो कुछ भी कमियाँ रही हैं उसका दायित्व मैं अपने उपर लेता हूँ और सहयोग के लिए मैं आप आर्यजनों का हृदय से

आभार और धन्यवाद व्यक्त करता हूँ। और आशा रखता हूँ कि प्रधान और महामन्त्री तथा आर्यवीर दल के प्रदेशाध्यक्ष श्री श्रवण कुमार के नेतृत्व में यह पत्रिका प्रत्येक आर्यजन के घर में पहुँचेगी और ऋषि दयानन्द के सिद्धांतों का प्रचार और प्रसार जन-जन तक होगा। मैं श्रद्धेय स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज को नमन करता हूँ आज वे हमारे मध्य नहीं हैं लेकिन उनके पदचिन्हों पर चलकर हमने आर्यवन्दना का कार्यभार सम्भाला और हर मास आर्यवन्दना के अंक प्रकाशित करते रहे। और अब तक १११ अंक प्रकाशित हो चुके हैं। मैं प्रदेश प्रधान और महामन्त्री के निर्देशानुसार अपने सभी दायित्वों से मुक्त हो रहा हूँ और उनका धन्यवाद ज्ञापित करता हूँ श्री विनोदस्वरूप मुख्य प्रबंध सम्पादक तथा श्री मायाराम प्रबंध सम्पादक का भी सहयोग देने हेतु आभार व्यक्त करता हूँ। यह पत्रिका प्रत्येक आर्यजन के घरों की शोभा बढ़ाती रहे। ऐसी मेरी कामना है मैं पुनः सभी आर्यजनों तथा वरिष्ठ नागरिकों का सहयोग हेतु आभार व्यक्त करता हूँ।

धन्यवाद!

—कृष्ण चन्द आर्य, सम्पादक

आर्य वन्दना शुल्क : वार्षिक शुल्क : ₹100, द्विवार्षिक शुल्क : ₹ 160, त्रैवार्षिक शुल्क : ₹ 200
आप शुल्क हि. प्र. स्टेट को-आपरेटिव बैंक लिमिटेड, सुन्दरनगर शाखा (खाता संख्या : 32510115356 आर्य वन्दना) (बैंक ब्रांच कोड HPB-325) में भी जमा करवा सकते हैं।

मुख्य संरक्षक	: रोशन लाल बहल, आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र., मोबाइल : 94180-71247
परामर्शदाता	: 1. रत्न लाल वैद्य, आर्य समाज मण्डी, हि. प्र. मोबाइल : 94184-60332 2. सत्यपाल भटनागर, प्राचार्य, आर्य आदर्श विद्यालय, कुल्लू मोबाइल : 94591-05378
विधि सलाहकार	: प्रबोध चन्द सूद (एडवोकेट), प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र. मोबाइल : 94180-20633
सम्पादक	: कृष्ण चन्द आर्य, महर्षि दयानन्द मार्ग, आर्य समाज, सुन्दरनगर (खरीहड़ी), जिला मण्डी (हि. प्र.) पिन 175019 मोबाइल : 94182-79900
मुख्य प्रबन्ध-सम्पादक	: विनोद स्वरूप, केयर आफ प्राईम प्रिंटिंग प्रैस, नरेश चौक, सुन्दरनगर, जिला मण्डी (हि. प्र.) मोबाइल : 94181-54988
प्रबन्ध-सम्पादक	: माया राम, गांव चुरढ़, सुन्दरनगर मोबाइल : 94184-71530
सह-सम्पादक	: 1. राजेन्द्र सूद, 106, ठाकुर भ्राता, लोअर बाजार, शिमला 2. मनसा राम चौहान, आर्य समाज, अखाड़ा बाजार, कुल्लू मोबाइल : 94599-92215
मुद्रक	: प्राईम प्रिंटिंग प्रैस, शाहीद नरेश कुमार चौक, सुन्दर नगर, (हि. प्र.) 175019
नोट	: लेखकीय विचारों से सम्पादकीय व प्रकाशकीय सहमति आवश्यक नहीं है।
सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक	कृष्ण चन्द आर्य ने हिमाचल आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए छपवाकर आर्य समाज, महर्षि दयानन्द मार्ग, खरीहड़ी (सुन्दरनगर) से प्रकाशित किया।

सम्पादकीय

भारत वर्ष के कोने-कोने में आजकल हिंसा का बोलबाला यत्र तत्र सभी जगह है। इस वर्ष दशहरे के बाबजूद उत्सव सभी जगह धूम धाम श्रद्धा और हर्षोल्लास से मनाया जाता रहा है। इस वर्ष भारत के प्रधानमंत्री ने इसे लखनऊ में मनाया जबकि पूर्व प्रथाओं के अनुसार देश के प्रधानमंत्री इसे दिल्ली में मनाते हैं। इस वर्ष दिल्ली के दशहरा उत्सव में पूर्व प्रधानमंत्री सरदार मनमोहन सिंह कांग्रेस अध्यक्षता श्रीमती सोनिया गांधी तथा भारत के उपराष्ट्रपति थे। हर वर्ष इस उत्सव को गरीब-अमीर धूमधाम व श्रद्धा से मनाते आए हैं। यह उत्सव सत्य की असत्य पर धर्म की अधर्म पर और पाप पर पुण्य का प्रतीक है। मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम का जीवन अत्यन्त मर्यादा पूर्ण और सभी आदर्शों से भरपूर रहा है।

उन्होंने जीवन के हरेक पल का सदुपयोग किया है। और कदम-कदम पर उन्होंने मर्यादाओं का पालन किया है। राम राज्य में आयोध्या की प्रजा राजा श्री राम के पदचिन्हों पर चलती थी और तभी जीवन आदर्शों से भरपूर था। रामराज्य में सभी जनता एक दूसरे से प्रेम करती थी और धर्मशास्त्र का पालन मन और मस्तिष्क से करती थी। श्रीराम वाल्मीकी रामायण के अनुसार सभी गुणों की भरमार थे जब उनके राज्यभिषेक का समय आया तो मंथरा ने कुटिलता से एक महान षडयन्त्र का शिकार होकर मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम को चौदह वर्ष के लिए जाना पड़ा। राजा दशरथ अपने प्यारे लाडले पुत्र को किसी भी परिस्थिति में वन नहीं भेजना चाहते थे। लेकिन अपनी मञ्जली रानी कैकयी को दिए वचन उन्हें कदम-कदम पर ऐसा निर्णय लेने के लिए बाध्य कर रहे थे जो सर्वथा तर्कहीन अनुचित और बेकार थे लेकिन क्षत्रिय होने के नाते उनके आगे कैकयी के वचनों को अनचाहे हुए भी स्वीकार करने पर बाध्य होना पड़ा उन्होंने राम को कैकयी की बातों का अनुपालन करने के लिए विवश होना पड़ा लेकिन उन्होंने अपने प्यारे और लाडले राम से कहा कि बेटा मैं कैकयी के वचनों में बंधा होने पर विवश हूँ। मैं चाहता हूँ कि तुम मुझे कारागार में बंद कर दो और आयोध्या के राजा बनो। क्योंकि तुम्हें आयोध्या की प्रजा राजा देखना चाहती है। लेकिन श्रीराम ने हाथ जोड़कर अपने पिता को केवल मात्र यह कहा कि महाराज मैं आपके आगे इसका पालन करने के लिए जंगलों की खाक छानने जाऊँगा। मेरा आपको कारागार में बंद करने की तनिक भी इच्छा नहीं है। आप सैकड़ों वर्षों तक आयोध्यापति बने रहे और मुझे

राज्य की तनिक भी आकांक्षा नहीं है। श्रीराम ने कदम-कदम पर मर्यादाओं का पालन किया और अपने पिता जी के आदेशों का पालन करने के लिए वे सहर्ष अपने छोटे भाई लक्ष्मण और सीता सहित जंगल चले गए। किसकिंधा में उनका परिचय सुग्रीव के साथ हुआ और सुग्रीव तथा उनके मंत्री हनुमान श्रीराम के अनन्य भगत बन गए। श्रीराम ने वाली का संहार किया। और सुग्रीव को किसकिंधा का राजा बना दिया। वे दल-बल सहित सीता की खोज हेतु बढ़ते रहे उन्हें संपाती के छोटे भाई जटायु से सीता के अपहरण किय जाने का समाचार मिला। घायल जटायु अपने जीवन की अंतिम सांसे ले रहा था उसे ढाँढस बंधाने के लिए श्रीराम ने केवल इतना ही कहा कि तुम नहीं मरोगे तुम्हारा नाम इतिहास के पन्नों में सदा सर्वदा स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेगा और जिस दुष्ट ने तुम्हारा ये हाल किया है। लहुलूहान किया एक दिन वह युद्ध भूमि में तड़प-तड़प कर मरेगा और मैं उस दैत्य के संहार का कारण बनूँगा। जिसने तुम्हें चोटों द्वारा छलनी कर दिया। जुटायु संपाती का छोटा भाई था और उसने बड़ी-बड़ी जटा रखी हुई थी वह मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के पिता राजा दशरथ का सहपाठी था और एक महान योद्धा भी था। इस बार रामलीला में लखनऊ में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने रावण, कुम्भकरण व मेघनाथ का युद्ध देखा। और अपने भाषण में उन्होंने कहा कि आज आतंकवाद का राहु विश्व की शान्ति को अपने पंजों में जकड़ना चाहता है लेकिन युद्ध समस्याओं का समाधान नहीं है उसके लिए हमें बुद्ध का रास्ता अपनाना पड़ेगा। श्रीराम के जीवन की एक झलक देने के लिए भारत वर्ष के कोने-कोने में श्रीराम के जीवन से प्रेरणा लेने के लिए नाटकों का मंचन किया जाता है। लेकिन कई बार रामायण के पात्र भी विपरीत कार्य कर बैठते हैं। कुछ सालपूर्व अचानक ही एक तम्बू में आग लग गई जब आग के कारणों का विस्तार से विचार किया गया तो यह तथ्य सामने आया कि जिस तंबू में आग लगी वहाँ सीता माता बीड़ी पी रही थी। अचानक बीड़ी छोड़कर उसे अपना वह अभिनय करने के लिए मंच पर जाना पड़ा और तंबू आग की लपटों में आ गया। इस प्रकार से देशवासियों को हम क्या उपदेश दे पाएंगे और जीवन को साफ-सुथरा बना सकेंगे। रावण वेदों का ज्ञाता और महान योद्धा और बलवान था वह बुरे कर्मों की लत में ऐसा फसा कि अपनी पत्नी मर्दोदरी की बड़ी बहन के साथ अभद्रतापूर्व व्यवहार करने लगा। इसलिए तुलसीदास ने ठीक ही कहा कि

राम ने रावण को मारा इसमें राम का तनिक भी दोष न था। श्रीराम तो युद्ध होने से पूर्व अंतिम समय तक रावण को समझाते रहे। लेकिन वह दुष्ट किसी भी हालत में बिना युद्ध के सीता को समर्पित करने को तैयार न था। अंत में वही हुआ जिसे वह चाहता था। श्री राम के वाणों के आगे वह युद्धभूमि में गिरकर अपनी अंतिम सांसे समाप्त करने लगा। उसके छोटे भाई विभीषण ने उसे युद्ध भूमि में अपनी गोद में संभाल लिया और वह जोर-जोर विलाप करने लगा श्रीराम ने उसकी पीठ पर हाथ रखते हुए कहा अब रोने-चिल्लाने का समय नहीं है। मेरी मनोकामना पूरी हो गई है और इसे रावण को उसके पापों का फल मिल चुका है मेरी अब उससे कोई शत्रुता नहीं है जैसा वह तुम्हारा वैसा मेरा भाई भी है अब उसका अत्येष्टि संस्कार करने की तैयारी करने और श्रीराम ने रावण के अत्येष्टि संस्कार भाग लिया। राम जीवन में नेक कार्यों की वर्षा करते रहे और रावण मेघनाथ व कुम्भकरण अत्याचार की वायु बहाते रहे। कोई भी धर्म की बात उन दुष्टों को समझाने में कारगर सिद्ध नहीं हुई परिणाम स्वरूप रावण को लंका पुरी और अपने प्रियजनों के साथ मिट्टी में मिलना पड़ा। हमें श्री राम के जीवन से प्रेरणा लेकर उनकी तरह ही एक अच्छा पुत्र, मित्र, सखा, बनना चाहिए। वे राजधर्म को जानते थे व मानते थे। वे कभी भी व किसी परिस्थिति में अपनी प्रजा का अहित नहीं चाहते थे श्री राम पुरुषोत्तम व आदर्श पुरुष रहे हैं और कदम-कदम पर प्रजा व देश का हित चाहते रहे हैं उनके प्रजा और भाई भी उनके पदचिन्हों पर चलते रहे। इसलिए किसी कवि ने ठीक ही राम तुम्हारा चरित स्वयं ही काव्य है। कोई कवि वन जाए सहज सम्भाव्य है उन्होंने तो स्वयं कहा है :-

मैं नहीं स्वर्ग का संदेश यहाँ पर लाया इस भूतल को स्वर्ग बनाने आया।

इस पृथ्वी के उपर ही अहिंसा मानवता का साम्राज्य देखना चाहते थे और मानव मात्र पर एक दूसरे के दुःख ताप व पीड़ा को दूर करना चाहते थे। दूसरे के आंसू पोंछने में ही जीवन का धर्म कर्म व मर्म मानते थे। वे सेवा द्वारा ही सभी प्राणियों को आगे बढ़ने का उपदेश देते थे।

किसी कवि के ये वाक्य राम के जीवन को चार चांद लगाते हैं करते रहो सदा तुम सेवा, सेवा से मिलता है मेवा सेवा से मत डरना भाई, सबकी सेवा करना भाई दीन दुःखियों दालितों व परड़ितों के आंसू पोंछने को ही वे सबसे बड़ा धर्मकर्म व जीवन का मर्म मानते थे।

—कृष्ण चन्द आर्य

ईश्वर की प्रार्थना

◆भारतेन्दु सूद, चण्डीगढ़

एक बार मेरी छोटी बेटि की सहेली का फोन आया। मैंने देखा वह बहुत रूखेपन से पेश आ रही है। मुझ से रहा न गया और कह ही दिया तुम्हारी सहेली है तो फिर यह रूखापन कैसा। उसका तपाक से उत्तर आया पापा आप नहीं जानते, इसे जब काम होता है तभी बात करती है, वैसे नजर भी नहीं मिलती। वह बहुत खूब, अगर एक छोटा बच्चा दूसरे का मूल्यांकन ऐसे करता है तो फिर वह ईश्वर भी उनसे ऐसे ही पेश आता होगा जो कि सिर्फ अपने काम के लिये उसे याद करते हैं। यह सत्य है कि हम में अधिक ईश्वर को अपने मतलब और इच्छा पूर्ति के लिये ही याद करते हैं। बात यहीं खत्म नहीं होती, अगर तो इच्छा पूरी हो गई तब तो आगे सम्बन्ध चलता है वरना भगवान बदलते ही देर नहीं लगती। कह देते हैं....इतनी बड़ी दुनिया में तुम ही थोड़े रह गये हो और भी बहुत हैं, तुम तो बात का जवाब तक नहीं देते, दूसरे कम से कम भरोसा तो देते हैं, तो क्या हुआ अगर फीस लेते हैं ?

यह सच्चाई है कि उस सृष्टिकर्ता को जब हम सिर्फ अपने काम के लिये याद करते हैं तो सिर्फ निराशा ही हाथ आती है क्योंकि अगर एक काम बन गया तो झट से हम उससे बड़ा काम लेकर उसके सामने पेश हो जाते हैं। हर काम तो पूरा हो नहीं सकता। हथेली पर सरसों भी थोड़े उगती है। नतीजा हम कभी न कभी उस ईश्वर से नाराज हो जाते हैं और अक्सर दूसरा ईश्वर ढूँढने के लिये बाज़ार में उत्तर आते हैं।

ईश्वर

मनुष्यों को सब जगत् के उत्पन्न करने वाले निराकार, सर्वव्यापी, सर्वशक्तिमान्, सच्चिदानन्दादि लक्षणयुक्त परमेश्वर, धार्मिक सभापति और प्रजाजन समूह ही का सत्कार करना चाहिये, उनसे भिन्न और किसी का नहीं। विद्वान मनुष्यों को योग्य है कि प्रजा-पुरुषों के सुख के लिये इस परमेश्वर की स्तुतिप्रार्थनोपासना और श्रेष्ठ सभापति तथा धार्मिक प्रजाजन के सत्कार का उपदेश नित्य करें, जिससे सब मनुष्य उनकी आज्ञा के अनुकूल सदा वर्तते रहें और जैसे प्राण जीवों की प्रीति होती है, वैसे पूर्वोक्त परमेश्वर आदि में भी अत्यन्त प्रेम करें।

—महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद भावार्थ

प्रबल राष्ट्रवाद के पर्याय-प्रो. बलराज मधोक

◆इन्द्रजित्देव, चूना भट्टियां, सिटी सेंटर के नजदीक, यमुनानगर (हरियाणा)

श्री बलराज मधोक का निधन हो गया। ६६ वर्ष पूर्व उनका जन्म वर्तमान पाकिस्तान के गुजरांवाला नगर के निकट जल्लन ग्राम में हुआ था उनका पूरा परिवार आर्य समाजी था। जिस दिन लाला लाजपतराय का बलिदान हुआ, उस दिन उनके परिवार में भोजन नहीं बना था। उनके पिता जी दिन भर उदास रहे व बोले—“आज भारत का सूर्य अस्त हो गया।” पिता जी कश्मीर-जम्मू के डोगरा-राज्यकाल में शासकीय कर्मचारी थे। पिता जी अपने विद्यार्थी-काल में ही आर्य समाज के प्रभाव में आ गए थे। महर्षि दयानन्द का जीवन और सिद्धांत उनके आदर्श थे। बी.ए. उत्तीर्ण करने के पश्चात् पिता जी को डाक-तार विभाग में इन्स्पेक्टर के पद के लिए-चुना गया था परन्तु साक्षात्कार के अवसर पर उन्होंने उच्च अंग्रेज अधिकारी द्वारा पूछे गए एक प्रश्न के उत्तर में यह सच्चाई बताई कि उन्होंने “सत्यार्थ प्रकाश” पढ़ा है तो उनका चयन ही नहीं किया गया। तब उन्होंने संकल्प कर लिया कि वे अंग्रेजी शासन की नौकरी नहीं करेंगे। श्रीनगर में रहते बलराज मधोक का सम्पर्क पं. विश्वबन्धु से हुआ जिनका उनके जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा। वे आर्य समाज, हजुरी बाग के पुरोहित थे। तब वह आर्य समाज श्रीनगर के गैर कश्मीरी हिन्दुओं की धार्मिक व सांस्कृतिक गतिविधियों का केन्द्र था। श्री चिरंजी लाल वानप्रस्थी उस आर्य समाज के प्रधान व बलराज मधोक के पिता श्री जगन्नाथ इसके मन्त्री थे। पूरा परिवार प्रत्येक सत्संग में वहाँ जाया करता था। श्री बलराज मधोक के अपने शब्दों में—महर्षि दयानन्द के जीवन चरित को पढ़ने का मुझे उन्हीं दिनों सौभाग्य प्राप्त हुआ। उनकी हर बात की बुद्धि और तर्क से परखने पर बल देना, उनकी सत्यनिष्ठा, निर्भीकता, देश प्रेम और आत्म विश्वास आर्यसमाजियों के जीवन में भी टपकता था मेरे पूज्य पिता जी में भी गुण उत्तम रूप में विद्यमान थे। मुझे अपने श्रीनगर के दिनों में उनके साथ-साथ आर्य समाज के अनेक गुरुजनों को देखने और उनके सम्पर्क में आने का अवसर मिला। उन सबका और आर्य समाज के वातावरण का मेरे जीवन पर गहरा और स्थायी प्रभाव पड़ा।” बलराज मधोक ने एम.ए. की परीक्षा इतिहास विषय में उत्तीर्ण की तो पी.एच.डी. करने का भी विचार किया और “स्वतन्त्रता आंदोलन में आर्य समाज का योगदान” विषय चुनकर शोध कार्य भी आरंभ कर दिया परन्तु १९४६ के बाद देश का राजनैतिक चक्र इतनी तेज़ी से चलने लगा कि उन्हें अपना सारा समय राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ और राजनैतिक गतिविधियों पर केन्द्रित करना पड़ा।

तब लाहौर का डी.ए.वी. महाविद्यालय पंजाब की एक प्रमुख शिक्षण-संस्था थी। इसमें लगभग ४,००० विद्यार्थी अध्ययनरत थे। महाविद्यालय और इससे सम्बद्ध अन्य संस्थाएं तथा आवास गृह लगभग एक वर्गमील क्षेत्र में फैले थे। अपने परिसर के विस्तार तथा विद्यार्थियों की संख्या की दृष्टि से यह उस समय के अलीगढ़ विश्वविद्यालय से कहीं बड़ा था। देश विभाजन के समय बलराज मधोक ने यह सुझाव दिया था कि अलीगढ़ वि.वि. के परिसर और डी.ए.वी. महाविद्यालय के परिसर की अदला-बदला कर ली जाए। विभाजन के बाद अलीगढ़ मुस्लिम वि. वि. के ८० प्रतिशत मुस्लिम विद्यार्थी और प्राध्यापक पाकिस्तान में जा बसे थे। विभाजन से पूर्व यह वि. वि. पाकिस्तान के पक्ष की गतिविधियों तथा मुस्लिम साम्राज्यिकता का सबसे बड़ा अड़डा था। इसे बन्द करके इसका परिसर डी.ए.वी. महाविद्यालय, लाहौर को देना सर्वथा उचित व राष्ट्रहित में होता परन्तु जवाहर लाल नेहरू और मौलाना आज़ाद को यह रूचिकर व उपयोगी नहीं लगा। अलीगढ़ मु. विश्वविद्यालय अब पुनः बहुत बड़ा विष्वक् बन चुका है। बलराज मधोक का उक्त सुझाव यदि मान लिया गया होता तो आज स्थिति सर्वथा अच्छी होती। बलराज मधोक की दूर दृष्टि होती थी, इस घटना से स्पष्ट प्रमाणित होता है।

जब १९८० में इन्दिरा गांधी दोबारा सत्तासीन हुईं तो अलीगढ़ में एक हिन्दू विश्व विद्यालय स्थापित करने की पूरी तैयारियाँ पूर्ण हो चुकी थीं परन्तु संजय गान्धी की मृत्यु होने से यह योजना रोक दी गई थी। मधोक जी को इसके भूमि पूजन के अवसर पर आमन्त्रित किया गया था।

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की सैनिक शिक्षा, सैनिक गणवेश व कालिज के अपने साथियों ने उनको आकर्षित किया। वे उसके सदस्य बने इसकी शाखाओं में नियमित जाने लगे व लाला लाजपतराय, बालगंगाधर तिलक, विपिन चन्द्र पाल व वीर सावर के राजनैतिक विचारों का प्रभाव बलराज मधोक पर पड़ता गया। वे सक्रिय राजनीतिक में प्रविष्ट हुए। भाई परमानन्द से भी वे मिलते रहे, जिनका यह विचार अपने दीर्घ अनुभवों के आधार पर बना था—“हिन्दू समाज एक मरता हुआ समाज है। इसे अपने और पराए की, मित्र और शत्रु की पहचान नहीं। इसमें जाति-पाति और भाषा भेद उतना अधिक है और हिन्दुत्व की भावना इतनी दुर्बल है कि हिन्दू के नाते यह समाज न कुछ सोच सकता है, न ही कुछ कर सकता है।”

इस प्रकार के वैचारिक उथल-पुथल में बलराज मधोक ने संघ का पूर्याकालिक कार्य करने वाला प्रचारक बनने का

निर्णय किया। इसके साथ ही वे सनातन धर्म कालिज, लाहौर, आत्मानन्द जैन कालिज, अम्बाला तथा डी.ए.वी. कालिज, श्रीनगर में इतिहास के प्राध्यापक के रूप में भी क्रमशः कार्य करते रहे। श्रीनगर में रहते उन्होंने संघ के स्वयंसेवकों का सक्रिय जाल बिछाया। संघ यदि उस समय सक्रिय राजनीति में कूद पड़ता तो भारत के इतिहास में यह एक निर्णायक भूमिका अदा कर पाता, यह बलराज मधोक का विचार था। उनका यह भी विचार था कि उस समय मात्र संघ ही ऐसी शक्ति थी जो देश को विभाजन की अग्नि से बचा सकता था परन्तु उसने ऐसा नहीं किया। असंख्य हिन्दू नारियों को बचाने का प्रशंसनीय कार्य संघ ने किया परन्तु इसका नेतृत्व देश व हिन्दू समाज को उचित व आवश्यक मार्गदर्शन और दिशा न दे सका, ऐसा बलराज मधोक के विचार थे। उनका यह भी विचार बना कि भारत की अखण्डता को बचाने के लिए पंजाब, सिन्धु, सीमा प्रान्त और पूर्वी बंगाल के राष्ट्रवादी देशभक्त हिन्दुओं को मौत के मुंह में जाने से बचाने को संघ जो भूमिका अदाकर सकता था, वह उसने नहीं की। उस समय यह एक मात्र शक्ति था जो देश को विभाजन की आग से बचा सकता था। यह ठीक है कि आग लग जाने के बाद इसके स्वयंसेवकों ने अपनी जान हथेली पर रखकर असंख्य लोगों को जलती आग में से निकाला। इसके लिए स्थानीय प्रचारक और स्वयं सेवक प्रशंसा के पात्र हैं, परन्तु परीक्षा की उस घड़ी का नेतृत्व देश और हिन्दू समाज को उचित और मार्गदर्शन और दिशा न दे सका। मधोक जी का यह भी विचार था कि यदि संघ का हिन्दू महासभा से तालमेल होता तो संभवतः हिन्दू महासभा देश-विभाजन से पूर्व एक प्रबल राष्ट्रवादी हिन्दुत्ववादी राजनैतिक संगठन के रूप में उभर पाती और भारत की राजनीति को नया मोड़ दे पाती। हिन्दू हिन्दू का शत्रु निकला। संघ हिन्दू महासभा को तो खा गया परन्तु स्वयं कोई राजनैतिक दिशा न दे पाया।

जब अक्टूबर, १९४८ में पाकिस्तान ने कश्मीर पर आक्रमण किया, तब मधोक डी.ए.वी. कालेज, श्रीनगर में उपाचार्य व कश्मीर में संघ के प्रमुख थे। उनके नेतृत्व में संघ ने शानदार कार्य किया। 'शरणार्थी हिन्दुओं की आर्थिक व सामाजिक सहायता की। अन्य कई प्रकार के साहसिक कार्यों से सेना, महाराजा हरिसिंह व कश्मीर की प्रजा की विशिष्ट सहायता करते रहे। कबाइलियों के वेश में पाकिस्तानी सेना ने जम्मू-कश्मीर पर आक्रमण किया। महाराज का एक दूत तब मधोक जी के घर आया व भारतीय सेना के आने तक श्रीनगर हवाई अड्डे की सुरक्षा का प्रबन्ध करने का अनुरोध किया। लगभग २०० स्वयं सेवकों को एकत्रित करके रात-रात में हवाई पट्टी की मुरम्मत भी की। जब जवाहर लाल नेहरू ने शेख अब्दुल्ला को जम्मू-कश्मीर के

प्रधानमंत्री के रूप में प्रजा की इच्छा के विपरीत स्थापित कर दिया तो उसने बलराज मधोक व संघ के कार्यकर्ताओं को विशेष निशाना बनाया। शेख अब्दुल्ला ने उन्हें मरवाने की बात एक गुप्त बैठक में कही परन्तु प्रकट में उनके कश्मीर में रहने पर प्रतिबन्ध लगा दिया तथा वे अनेक कष्ट सहकर जम्मू में आ गए। ट्रकों, बसों तथा कई-कई किलोमीटर पैदल चलकर जम्मू पहुंचे। विस्तारमय से हमने उनकी कष्टकारी यात्रा का एक ही वाक्य में वर्णन किया है। जम्मू में आकर पं. प्रेमनाथ डोगरा की सहायता से प्रजा परिषद् नामक एक राजनैतिक संगठन की स्थापना की तथा अब्दुल्ला के अत्याचारों व राष्ट्रद्रोह की गतिविधियों के विरुद्ध आवाज़ उठानी प्रारम्भ की। अब्दुल्ला ने उन्हें जम्मू से भी निष्कासित कर दिया। वे दिल्ली में ही बसने को विवश हुए। उनके माता-पिता को भी जम्मू-कश्मीर छोड़ना पड़ा। इस प्रकार मधोक जी ने नए बलवलों से अपना नया राष्ट्रीय जीवन आरम्भ किया।

स्व. श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने जब केन्द्रीय मन्त्री का पद त्याग करके 'भारतीय जनसंघ' नामक एक नये राजनैतिक दल का गठन किया तो बलराज मधोक उसमें सक्रिय हुए। उक्त संगठन के संस्थापकों में उनका नाम भी सम्मिलित है। वे श्यामा प्रसाद मुखर्जी को अपना राजनैतिक गुरु मानते थे। उक्त दल ने जब कश्मीर आन्दोलन आरम्भ किया तो बलराज मधोक ने उसमें भी सक्रिय भाग लिया। तदनन्तर वे जन संघ की गतिविधियों में अत्यन्त व्यस्त हुए तथा देशभर में इसके फैलाव के लिए यत्नशील रहे। दिल्ली से वे दो बार लोकसभा के सदस्य भी बने। प्रकाशवीर शास्त्री व डॉ. राममनोहर लोहिया की तरह वे अपने तथ्यपरक, राष्ट्रवादी व अत्यन्त प्रभावशाली भाषणों से अन्य सदस्यों को अत्यन्त प्रभावित कर लेते थे। इन्दिरा गांधी व जवाहरलाल नेहरू की नीतिगत व व्यवहारगत असंगतियों पर वे सटीक आलोचना करने में सिद्धहस्त थे।

सन् १९६२ ई. में जब हम चीन से पिटे व चीन ने हमारी ८०,००० वर्गमील धरती हथिया ली थी तो लोकसभा में उन्होंने जवाहर लाल से पूछा था :-

न इधर-उधर की तू बात कर,
यह बता कि काफिले क्यों लुटे ?
हमें रहजनी से ग़रज नहीं
तेरी रहबरी से ग़रज नहीं
तेरी रहबरी का सवाली है।

राम जन्मभूमि मथुरा की कृष्णा जन्म भूमि व काशी में विश्वनाथ मन्दिर भूमि को हिन्दुओं को सौंप देने की मांग भी सर्वप्रथम लोकसभा में उन्होंने ही रखी थी जिसे भारतीय

जनता पार्टी ने अपना चुनावी मुद्दा बना लिया। बलराज ने अन्य पुस्तकों के अतिरिक्त एक पुस्तक "Indianisation" लिखी थी। जिसमें भारतीय मुसलमानों को अपनी उपासना पद्धति को जारी रखते हुए भी पाकिस्तान व अन्य देशों के प्रति वफादार न रहकर अपनी मातृभूमि भारत के प्रति सम्पूर्ण वफादार रहने की आवश्यकता, लाभ व उपायों आदि पर विचार दिए थे। दो उपन्यासों के अतिरिक्त राजनैतिक, सामाजिक एवं ऐतिहासिक विषयों पर हिन्दी तथा अंग्रेजी में प्रकाशित व चर्चित भी रहीं। वे दो बार दिल्ली से लोकसभा में सदस्य बनकर पहुँचे थे। तीसरी बार सन् १९७२ के मध्यावधि चुनाव में वोटों की गणना की धांधली की सहायता से पराजित कराया गया। वे कई वर्षों तक भारतीय जनसंघ के प्रधान भी रहे। परन्तु दीन दयाल उपाध्याय जी की रहस्यमयी हत्या में जनसंघ के उन नेताओं, जिनकी गर्दन इन्दिरा गांधी के हाथ में जा चुकी थी, को अपना हथियार बनाकर बलराज मधोक को जनसंघ से निकलवाकर उनकी राजनैतिक सक्रियता तथा प्रतिष्ठा समाप्त करने की योजना सर्वोच्च राजनैतिक नेतृत्व ने बनाई और सन् १९७३ में मधोक जी जनसंघ की प्राथमिक सदस्यता से ही हटा दिए गए।

सन् १९६६ में जब लोकसभा के चुनाव हुए तो लोकसभा में जनता पार्टी के ५ प्रतिशत उम्मीदवार विजयी होकर पहुँचने में सफल हुए थे परन्तु जनसंघ, जोकि जनता पार्टी के घटकों में से एक था, ने मधोक जी को प्रत्याशी न स्वयं बनाया तथा न ही जनता पार्टी के दूसरे घटकों को इन्हें उम्मीदवार बनाने दिया। बलराज मधोक यदि पद व सुविधाओं के ही इच्छुक होते तो वे तब स्वतन्त्र प्रत्याशी के रूप में चुनाव में उतर सकते थे व सफल होकर लोकसभा में सरलता से पहुँच सकते थे। दिल्ली से वे पहले भी दो बार सरलता से सांसद चुने जा चुके थे तथा सन् १९७५ से सन् १९७७ तक १८ मास तक अन्य नेताओं की तरह आपत्काल में बन्दी जीवन व्यतीत का चुके थे परन्तु उन्होंने ऐसा न करके राजनैतिक परिचय दिया।

सन् १९६६ में संजीव रेड्डी को राष्ट्रपति पद पर आसीन किया गया तो संजीव रेड्डी ने उन्हें राज्य सभा में मनोनीत सदस्य के रूप में प्रवेश कराने की पेशकश की, जो उनके लिए सम्मानजनक था परन्तु बलराज मधोक ने इसे स्वीकार नहीं किया व कहा कि मैं संघर्ष करके आगे बढ़ूँगा व मनोनीत होकर सदस्य के रूप में राज्यसभा में जाना पसन्द नहीं करता।" वे अपने नेतृत्व में राष्ट्रवादी हिन्दुत्ववादी सरकार बनाने का स्वप्न देखते थे। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् की स्थापना भी मधोक जी ने ही की थी।

सन् १९६५-६६ में जो गो रक्षा आन्दोलन चला था, उसमें

भी उन्होंने सक्रिय भाग लिया था व फरवरी १९६७ में उनके ही नेतृत्व में जनसंघ ने लोकसभा में ३४ सीटें प्राप्त कीं। अनेक प्रदेशों में कांग्रेस हारी थी। परिणामस्वरूप कुछ प्रदेशों में सयुक्त विपक्षी दलें ने सरकारें बनाईं। केन्द्र में भी इन्दिरा गांधी को कम्युनिस्टों व समाजवादी सदस्यों की सहायता से ही सरकार चलाने पर विवश होना पड़ा था।

वे "आर्गेनाइज़र", "वैचारिक विकल्प" तथा "हिन्दू वर्ल्ड" के कई वर्षों तक सम्पादक रहे। जनता पार्टी की सरकार ने जब अल्प संख्यक आयोग की स्थापना की तो इसके दूरगामी विघटनकारी परिणामों का अनुमान लगाकर इसका विरोध बलराज मधोक ने किया तथा मानवाधिकार आयोग की स्थापना की ज़ोरदार मांग की परन्तु उनकी मांग नहीं मानी गई। उन्होंने प्रधानमन्त्री मोरार जी देसाई से भी इस आयोग की स्थापना न करने को कहा तो मोरार जी ने कहा था—मैं सभी घटकों की पारस्परिक सहमति से बना प्रधानमंत्री हूँ। मेरी संगठन कांग्रेस के केवल ५० सदस्य ही हैं। यदि आपके जनसंघी साथियों ने इस आयोग की स्थापना का विरोध किया होता तो मेरे हाथ मज़बूत होते व मैं अल्प संख्यक आयोग के सम्बन्ध में निर्णय बदल देता।"

राष्ट्रवादी व मानवादी दृष्टिकोण की उपेक्षा देखकर बलराज मधोक ने सन् १९७६ में जनता पार्टी से त्यागपत्र दे दिया। सन् १९८० ई. में उनकी पुस्तक "रेशनल आफ् हिन्दू स्टेट" अर्थात् "हिन्दू राज्य का तार्किक औचित्य" छपी व तहलका मच गया। सभी दलों के ३५ मुस्लिम सांसदों ने इस पुस्तक पर प्रतिबन्ध लगाने की इन्दिरा गांधी से मांग की। इन्दिरा गांधी ने स्वयं इस पुस्तक को पढ़कर इसे प्रतिबन्धित करने से इंकार कर दिया। प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी ने यह भी कहा कि यह पुस्तक प्रत्येक भारतीय को पढ़नी चाहिए। कुछ दिनों पश्चात उक्त पुस्तकों में दिए तर्कों, तथ्यों व सुझावों से प्रभावित इन्दिरा गांधी ने तब बलराज मधोक को अपने मन्त्रीमण्डल में सम्मिलित होकर सरकार के एक प्रतिष्ठित अंग के रूप में अपनी सोच को कार्य रूप देने की पेशकश की जिसे उन्होंने स्वीकार नहीं किया। वे इसे स्वीकार कर लेते तो देश का भविष्य क्या बनता, यह गंभीर विषय विचारणीय है।

वे भारत माता के सच्चे सपूत थे। उनकी भारत भक्ति गजब की थी। वे आजीवन भारत के लिए सोचते रहे। भारत के लिए लिखते रहे, कर्म करते रहे। उनकी वीरता, विद्वता, सैद्धान्तिक दृढ़ता तथा भारत माता के प्रति निष्ठा अनुकरणीय है। उनका देहान्त २ मई, २०१६ को १६ वर्ष की अवस्था में हुआ जो उनकी संयमी एवं भारतीय जीवन-शैली अपनाने का प्रमाण है।

‘स्वाहा’-अर्थ एवं उच्चारण

◆सत्यपाल भटनागर, अखाड़ा बाजार, कुल्लू (हि० प्र०)
महर्षि ‘दयानन्द ने यज्ञ कार्यों को प्रमुखता दी है। सक्रिय आर्य समाजों में दैनिक या साप्ताहिक यज्ञ किये जाते हैं। आर्य समाज के सभी कार्य, पर्व और उत्सव यज्ञ से ही आरम्भ होते हैं। स्वाहा की ध्वनि से ही यज्ञ की आहुतियाँ अग्नि को समर्पित करते हैं। स्वाहा के कई अर्थ विद्वानों ने सुझाये हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि सन्दर्भ के अनुसार स्वाहा का अर्थ बदल जाता है। विभिन्न अर्थ इस प्रकार हैं।

स्वाहा: समर्पित है—सच्चे हृदय से प्रार्थना करता हूँ।—अर्पण करता हूँ: प्रदान करता हूँ—सत्य है—वरदान दो इत्यादि। कुछ संस्कृत के विद्वानों ने इस शब्द का अर्थ इस प्रकार दिया है। सुआहेति दा:—कोमल, मधुर, कल्याणकारी, प्रिय वचन बोलने चाहिये।

स्वा वागाहेति वा—वागेन्द्रियों से वही कहना चाहिये जो ज्ञान पूर्ण हो।

स्व प्राहेति वा—अपने पदार्थों को ही अपना कहना चाहिये। स्वाहुतं हवि—शुद्ध करके अच्छी रीति से हवि देनी चाहिये। स्वाहा शब्द में सु उपसर्ग है और धातु आह्वे है।

सु—सुन्दर, अच्छा, व्यवस्थित है।

आह्वे—बुलाना

प्रत्येक वेद मन्त्र किसी न किसी देवता को समर्पित है। उस मन्त्र का उच्चारण कर आदर पूर्वक उस देवता को बुलाकर, हवि उन्हें समर्पित करते हैं। अग्नि को सभी देवताओं का मुख माना गया है। अतः हम हवि को अग्नि में डाल कर उक्त देवता को समर्पित करते हैं। अग्नि देव के माध्यम से उस मन्त्र को हवि पहुँचाते हैं। कोई भी यज्ञ तब तक सफल नहीं माना जाता, जब तक मन्त्र का उसे ग्रहण कर लेता। उस देवता तक हवि पहुँचाने का माध्यम अग्नि को माना गया है। अग्नि देव की दाहिका शक्ति ही स्वाहा मानी गई है। वेद मंत्रोच्चारण कर अग्नि में आहुति देने से, देवताओं को वह आहार रूप में प्राप्त हो जाती है।

‘यज्ञो वै स्वाहाकारः’ यह शतपथ ब्राह्मण का बोल है। स्वाहा उच्चारण के साथ यज्ञ में आहुति दी जाती है।

‘मन्त्रान्त स्वाहाकारः’—यह गोभिल सूत्र का बोल है। मन्त्र के अन्त में स्वाहा बोला जाता है।

‘स्वाहा कृते उर्ध्वनभसं मारुतम गच्छतम्।’ यह यजुर्वेद का निर्देश है। स्वाहा की ध्वनि करने पर, आकाश के ऊपर वायु में गति हो। अतः स्वाहा की ध्वनि ज़ोर, से करनी चाहिये। गोपथ ब्राह्मण अनुसार ‘स्वाहा’ का उच्चारण मन्त्र के स्वर के अनुसार ही करना चाहिये। कुछ लोग स्वाहा उच्चारण से पूर्व ओ३म् जोड़ लेते हैं। शास्त्रों में ऐसा विधान नहीं है। वे ऐसा इसलिये करते हैं कि सारी आहुतियाँ एक साथ डाली जायें। यदि कहीं यह परिपाटी है तो उसे बन्दकर देना चाहिये।

स्वतन्त्रता दिवस का महत्त्व

◆वेदप्रकाश, गुडगाँव (हरियाणा)

मनुष्य के लिए स्वतन्त्रता का बड़ा महत्त्व है। मनुष्य को मन, वचन, कर्म की स्वतन्त्रता स्वाभाविक रूप से प्राप्त है। मनुष्य को मनन—चिन्तन—सोच—विचार, बोलने—कहने—अभिव्यक्ति तथा कर्म करने की स्वतन्त्रता प्राप्त है। यह मनुष्य की उन्नति के लिए आवश्यक है। ईश्वर भी मनुष्य की इस स्वतन्त्रता में हस्तक्षेप नहीं करता।

संसार में कुछ मनुष्य, समूह, राष्ट्र अपने स्वार्थवश अपने छल व बल के द्वारा अन्य मनुष्यों, समूहों व राष्ट्रों की स्वतन्त्रता का अधिग्रहण करते हैं। यह कार्य प्रतिदिन किसी—न—किसी रूप में चलता रहता है। परन्तु जहाँ कहीं पर स्वतन्त्रता का हनन होता है तो उस स्वतन्त्रता की पुनः प्राप्ति के लिए प्रयास, संघर्ष भी शुरू हो जाता है, जो स्वतन्त्रता की पुनः प्राप्ति तक निरन्तर चलता रहता है। स्वतन्त्रता की पुनः प्राप्ति कितने समय में होगी, यह इस बात पर निर्भर करता है कि स्वतन्त्रता का हरण करने वालों और स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए प्रयास—संघर्ष करने वालों का साहस, सामर्थ्य कितना है।

हमारे देश में विदेशी लोगों द्वारा हमारी स्वतन्त्रता के हनन का कार्य ग्यारहवीं सदी में ही शुरू हो गया था, जो बीसवीं सदी के सन् १६४७ तक चला। पहले यह कार्य मुगलों द्वारा और बाद में अंग्रेजों द्वारा किया गया। भारतीय अपनी स्वतन्त्रता की पुनः प्राप्ति के लिए इस लम्बे काल में निरन्तर संघर्ष करते रहे। ऐसे लोगों में महाराणा प्रताप, छत्रपति, शिवाजी, गुरु गोविन्द सिंह आदि मुगलकाल में प्रमुख थे। बाद में अंग्रेजों के काल में सन् १८५७ से १९४७ तक महारानी लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे, नाना साहब, मंगल पाण्डे, महात्मा गांधी, सुभाषचन्द्र बोस, चन्द्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिल, भगतसिंह आदि अनेक लोगों ने स्वतन्त्रता की पुनः प्राप्ति के लिए संघर्ष किया व बलिदान दिया। इस कार्य में महर्षि दयानन्द द्वारा मार्गदर्शन का भी विशेष महत्त्व है। नौ सदियों के लम्बे संघर्ष व बलिदानों के बाद अन्त में १५ अगस्त सन् १९४७ को इस देश के लोगों ने अपनी अपहृत स्वतन्त्रता को पुनः प्राप्त किया। इसीलिए १५ अगस्त को स्वतन्त्रता दिवस बड़े उत्साह से समारोहपूर्वक पूरे राष्ट्र द्वारा मनाया जाता है। इस प्रकार स्वतन्त्रता दिवस का बहुत ज्यादा महत्त्व है। स्वतन्त्रता छिन जाने के बाद ही स्वतन्त्रता के महत्त्व का अहसास होता है। इसलिए यह अति आवश्यक है कि हम स्वतन्त्रता के महत्त्व को समझें और स्वतन्त्रता दिवस पर सभी लोग मिलकर विशेष आयोजन करें। फिर से हमारी स्वतन्त्रता का कोई अपहरण न कर सके, इसके लिए निरन्तर उपाय व प्रयास करते रहें, यह अति आवश्यक है।

वरिष्ठ नागरिक दिवस

♦माया राम, वन अधिकारी (हि.प्र.)

मण्डी जिला में अन्तर्राष्ट्रीय वरिष्ठ नागरिक दिवस धूम-धाम से राजकीय डिग्री कॉलेज मण्डी के सभागार में धूमधाम व हर्षोल्लास से मनाया गया। यह समस्त कार्यक्रम जिला मण्डी के वरिष्ठ नागरिक एसोशिएशन के अध्यक्ष श्री रणपत सिंह राणा की देख रेख में मनाया गया। जिला मण्डी के कोने-कोने से आए सैंकड़ों वरिष्ठ नागरिकों ने इस उत्सव में भाग लिया जिला मण्डी के डी.सी. साहिब की अनुपस्थिति में उनके सहायक उच्चाधिकारी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। इस कार्यक्रम में अनेक वरिष्ठ नागरिकों ने अपने विचार व्यक्त किए और श्री नेत्र सिंह पठानिया ने भी उत्सव में शिरकत की। जिला मण्डी पेंशनर कल्याण संघ के पूर्व अध्यक्ष श्री कृष्ण चन्द आर्य ने सभी वरिष्ठ नागरिकों को एकता के सूत्र में बंधकर संघ को मजबूत करने हेतु अपने विचार अभिव्यक्त किए। उन्होंने जिला स्वास्थ्य अधिकारी महोदय मण्डी से भी प्रार्थना, कि वरिष्ठ नागरिक को प्रत्येक चिकित्सालय में प्राथमिकता दी जाए व सरकार की ओर से भी उनकी चिकित्सा सम्बंधी समस्याओं का समाधान हेतु भरपूर व आवश्यक और प्रभावशाली कदम उठाए जाए।

आज वरिष्ठ नागरिकों की दशा प्रतिदिन चिन्तनीय होती जा रही है। उन व्यक्तियों की सहायता करने के बजाए उन्हें परिवार के लोग वृद्धाश्रम में भेजना ही श्रेयस्कर समझते हैं जो अत्यन्त चिंताजनक बात है। आर्य समाज के प्रवर्तक वेदों के उद्धारक संत शिरोमणी देव दयानन्द ने बच्चों व वरिष्ठों की ओर विशेष ध्यान देने हेतु समाज से आग्रह किया। ऋषिवर दयानन्द ५९ साल ही लिए। लेकिन अपनी आयु के अल्पकाल में उन्होंने वह कमाल कर दिखाया जो आगे आने वाली पीढ़ी लम्बे समय तक याद रखेंगी। मनुष्य के बहुमुखी उत्थान के लिए ऋषिवर ने परिवार के सभी लोगों से अनुग्रह किया। आज आवश्यकता बुजुर्गों की सेवा करने की है और ऋषिवर दयानन्द के अनुसार मातृदेवोभव पितृदेवामय आचार्य देवो भवके मूल सूत्र को हमें आंखों से ओझल न होने देना चाहिए अपितु आयु पर्यन्त इसका अनुपालन करते रहना चाहिए। स्वामी जी ऋषिवर मन, वचन व कर्म से मानव मात्र का उद्धार चाहते थे मुझे सुन्दरनगर आर्यसमाज में पधारे स्वामी विद्यानन्द की एक छोटी से बात याद आती है। उन्होंने अपने भाषण में उपस्थित जन समूह से कहा कि आज महिलाएं मेरे पास आईं मैंने उनसे आने का कारण पूछा इस पर वह बोल उठी कि स्वामी जी हम आपके दर्शन करने आई हैं। अगर बुढ़ापा बुरा होता तो वह ऐसा क्यों कहती उस वरिष्ठ नागरिक तथा बुजुर्ग व्यक्ति

का जीवन धन्य है जो अपने जीवन भर सुकर्म करके आनन्दित रहे और दूसरे के जीवन में भी सुख घोलता रहा। वरिष्ठ होकर अपने अर्जित ज्ञान की वर्षा विश्व के जन-जन व मन-मन में करता रहे और सभी जनता के सुख-दुःख में भागीदार बनता रहे। जीवन में ज्ञान प्राप्त करना एक बहुत सुन्दर गुण है। महाभारत में युधिष्ठिर के राजसूयी यज्ञ में श्रीकृष्ण ने दुर्योधन को धन बांटने का कार्य संभाला। चालाक दुर्योधन व शकुनि की तिकड़ी हैरान थी कि श्री कृष्ण ने जो बहुत अधिक चतुर बनता है अपने लिए इस राजसूयी यज्ञ में कोई विशेष कार्य करने के लिए रखा होता। दुर्योधन से नहीं रहा गया उसने श्री कृष्ण से पूछ ही लिया कि आपने इस यज्ञ में अपने लिए कौन सा कार्य करने को रखा है। दुर्योधन की कुटिलता को योगीराज जानते, मानते व पहचानते थे। वे मुस्कुराते हुए बोले दुर्योधन मैं समस्त यज्ञ में पधारे समस्त राजा महाराजा की जुठन उठाने का कार्य करूंगा श्री कृष्ण की बात सुनकर दुर्योधन के मुंह को ताला लग गया। दूसरी ओर पितामह विभीषण कुलगुरु व द्रोणाचार्य दुर्योधन की बातें सुनकर मुस्कुराते रहे। श्री कृष्ण ने सेवा भाव को सर्वापरी ठहराया। जब हम पाठशाला में पढ़ते थे तो हमें भी यह वाक्य पढ़ाए, लिखाए व रटाए जाते थे।

“करते रहो तुम सदा सेवा, सेवा से मिलता है मेवा

सेवा से मत डरना भाई, सबकी सेवा करना भाई,

सेवक ही वन जाता है स्वामी, दुनिया में हो जाती है नामी” कर्ण महान दानवीर था व योद्धा था। शकुनि और दुर्योधन का साथी होने के उपरान्त भी जनमानस में उसकी गुणों के कारण पूजा होती है। उदाहरण देते हुए आज भी किसी व्यक्ति विशेष को दानवीर कर्ण की संज्ञा देते हैं यही नहीं अपने बच्चों का नाम भी बहुत घरों में लोग करण के नाम रखते हैं। कश्मीर में महाराजा हरिसिंह ने अपने बेटे का नाम करण सिंह रखकर उस महान योद्धा महाभारत के कर्ण को सच्ची श्रद्धांजली दी है। आज विश्व में महाभारत के वाक्यों को जानने मानने व पहचानने वाले बहुत से लोग हैं। कर्ण अपने गुरु के कारण महान व पवित्र था। उसने अपने जीवन की अंतिम सांस तक अपने मित्र दुर्योधन का साथ नहीं छोड़ा। श्री कृष्ण के शान्ति प्रस्तावों को कर्ण, शकुनि और दुर्योधन की तिकड़ी ने पलीता लगा दिया। फिर भी अन्त में श्री कृष्ण ने वापस जाते हुए कर्ण को यह बोला कि वही कुन्ती का पहला पुत्र है अतः दुष्ट दुर्योधन का साथ छोड़ दो और राजपाठ पाण्डव तुझे ही देंगे। इस पर कर्ण ने कहा “यदि जानामि में राजा कुन्तया प्रथम पुत्रम् न सह—राज्यम् गृह्यति।” यह मैं

स्वीकार करता हूँ कि युधिष्ठिर को जब यह आभास हो जाएगा कि मैं कुन्ती का पहला पुत्र हूँ वह स्वयं ही राजपाठ छोड़ देगा। लेकिन मैं दुर्योधन को अंतिम सास तक सहयोग देने का वचन कर चुका हूँ और उसके लिए मैं चट्टान की तरह अडिग हूँ। मैं किसी भी परिस्थिति में उसका साथ नहीं छोड़ूंगा। विपत्ति के बादलों के मडराने पर उसने मुझे अंग देश का राजा बनाया था उसके उपकारों को मैं नहीं भूल सकता कर्ण ने अंतिम सांस तक अपना यह वचन पूरा भी किया। कर्ण के हठ के आगे योगीराज की एक भी न चली और वे वापिस चले गए। आज आवश्यकता सत्य अहिंसा, तप और त्याग को जीवन में ग्रहण करने की है न कि इन बातों से दूर भागने की। ऋषिवर दयानन्द यह कहा करते थे कि मनुष्य का सबसे बड़ा कर्म धर्म परोपकार करना है। सत्यार्थ प्रकाश के नियमानुदेशों में १० नियम में स्वामी जी महाराज यह लिखते हैं कि संसार का उपकार करना ही आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक व सामाजिक उन्नति करना ऋषिवर दयानन्द के अनुसार उपकार करने की बात को न भुलाया व न झुठलाया जा सकता है मानव सेवा सबसे बड़ा कर्म, धर्म व मर्म है। इसे हमें जीवन में अपनाए रहना चाहिए ताकि हमारा जीवन सुखों से भरपूर रहे। अन्त में उस सर्वशक्तिमान प्रभु के आगे हम करवद्ध यही प्रार्थना करते हैं :-

मानस भवन में आर्यजन जिसकी उतारें आरती
भगवान भारत वर्ष में गूंजे हमारी भारती।

उठो जवानों

उठो जवानों टूट पड़ो, फिर दुश्मन ने ललकारा है,
घात लगाकर उड़ी में, धोखे से हमको मारा है।
देख के अर्थी जवानों की, फिर आज हिमालय रोया है,
बहनों ने भाई तो, माओं ने भी बेटा खोया है।
मच्छर सी औकात है इसकी फिर ऐसी हरकत है,
बस कश्मीर मुझे मिल जाये, यही तो इसकी हसरत है।
कश्मीर को तो भूल ही जाओ, अपने मुल्क की सोचो तुम
सिंघ बलूच ना रहे तुम्हारे, यह भी सोचो समझो तुम।
देश की खातिर मरने वालों, मौत न तुमको आएगी
गली-गली में चर्चे होंगे, गीत ये दुनिया गाएगी।
धोखे से जो हमला करते, वे कायर ही होते हैं
डर-डर कर ही जिन्दा रहते और डर कर ही मरते हैं
नानी याद दिला दो उसको ये पैगाम हमारा है
उठो जवानों टूट पड़ो, फिर दुश्मन ने ललकारा है।

-रमा शर्मा, खरीहड़ी, सुन्दरनगर (हि.प्र.)

समाचार

सुन्दरनगर निरंकारी मिशन पुराना बाजार के मुख्य संचालक की पत्नी कृष्णा देवी का अचानक Silent हृदयघात से निधन हो जाने के कारण सुन्दर नगर में शोक की लहर दौड़ गई। वह एक अत्यन्त मिलनसार एवं सभी के दुःख-सुख में भाग लेने वाली महिला थी उनके अचानक चले जाने से जहाँ उनके पति एवं समस्त सम्बन्धियों को परम दुःख पहुंचा है वहाँ सुन्दर नगर निवासी लम्बे समय तक उनके समाज में किए जाने वाली सेवाओं को नहीं भूल पाएंगे। सभी के मन व मस्तिष्क में उनकी स्मृति जीवन्त रहेगी। वे दीन दुःखियों दालितों के आंसू हमेशा पोंछते रही हैं। वे सभी के दुःख-सुख में काम आने वाली महिला थी। दिवंगत आत्मा की शांति सद्गति के लिए तथा धीमान परिवार को शक्ति व साहस प्रदान करने के लिए हम परम पिता परमात्मा के चरणों में प्रार्थना करते हैं। दिवंगत आत्मा को प्रभु अपनी व्यवस्था में शांति प्रदान करें और वह अच्छे नेक व कुलीन व संस्कृत परिवार में पुनः जन्म लेकर १०० साल तक जनता की लग्न से सेवा करती रहें और परोपकार के कार्यों में उनका मन व मस्तिष्क सदा आगे भी लगा रहे उनके अचानक चले जाने से सुन्दरनगर के निरंकारी मिशन और उनके चेहत्तों को भारी धक्का लगा है। प्रभु सभी को इस महान् शोक को सहन करने की शक्ति व सामर्थ्य प्रदान करे। श्रीमति धीमान जहाँ भी रहे अत्यन्त परम सुख व शान्ति से प्रभु चरणों में निवास करती रहे। उनकी सेवाओं को समाज लम्बे समय तक याद रखेगा। आर्य प्रतिनिधि सभा सुन्दरनगर के हिमाचल प्रदेश के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री कृष्ण चन्द आर्य ने दिवंगत आत्मा की शान्ति व सद्गति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की प्रभु धीमान परिवार को इस महान् दुःख को सहने की शक्ति प्रदान करें।

-सम्पादक

बेटी

अगर बेटा बारिस है, तो बेटी पारस है,
अगर बेटा वंश है, तो बेटी अंश है।
अगर बेटा आन है, तो बेटी शान है।
अगर बेटा तन है, तो बेटी मन है।
अगर बेटा मान है, तो बेटी गुमान है।
अगर बेटा संस्कार है, तो बेटी संस्कृति है।
अगर बेटा राग है, तो बेटी बाग है।
अगर बेटा दवा है, तो बेटी दुआ है।
अगर बेटा भाग्य है, तो बेटी विधाता है।
अगर बेटा शब्द है, तो बेटी अर्थ है।
अगर बेटा गीत है, तो बेटी संगीत है।
अगर बेटा प्रेम है, तो बेटी पूजा है।

-रमा शर्मा, खरीहड़ी, सुन्दरनगर (हि.प्र.)

अन्ध विश्वास आज भी हैं

♦ डॉ बिजेन्द्र पाल सिंह, चन्द्रलोक कालौनी, खुर्जा (उ.प्र.)

महर्षि दयानन्द सरस्वती के समय भारत में अंग्रेजी शासन था उस समय के समाज की स्थिति चिन्ताजनक थी स्त्री-पुरुष अन्ध विश्वास व पाखण्डों तथा कुरीतियों में पड़े हुए थे तांत्रिकों का जाल चारों ओर फैला हुआ था बलि प्रथा फूल फूल रही थी, यज्ञों में भी पशुओं की आहुति देते थे, फलित ज्योतिष को मानते थे, मूर्ति पूजा बलवती थी, गुरु वाद बढ़ रहा था, वेद को न जानकर पुराणों को मानने लग गये थे। अंग्रेज वेद को गड़रियों के गीत बताते थे और भारत के गौरव को नीचा बता अपमान करते थे। भारत एक खोज में महाभारत युद्ध को कबीलों की लड़ाई बताना अंग्रेजों के ही विचार थे व चाल थी जिससे भारतीयों के मन में अपने राष्ट्र व महापुरुषों से घृणा हो जाये।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भारत के गौरव को बता कर जनता को जागरूक किया वेद ईश्वर कृत व ज्ञान के भण्डार हैं वेद से बढ़ कर कुछ भी नहीं है भारत का गौरव पुनः वेदाध्ययन व वेदाचरण से ही प्राप्त किया जा सकता है वेद ज्ञान का सागर है संसार की श्रेष्ठता हेतु है ऋषि ने जो शंकाएँ समाज में थीं व अंग्रेजों की कुटिल नीति से भ्रम फैलाया गया था उसे तोड़ा।

उधर मिशनरियाँ भारतीयों में भारत की छवि विकृत बताकर भ्रम उत्पन्न कर मत परिवर्तन करा रही थीं ऋषि ने भी शुद्धि का रास्ता खोल अपने धर्म से अलग हुए व्यक्तियों को आर्य धर्म में पुनः वापिस आने को प्रेरित किया व शुद्धिकरण कर आर्य धर्म में प्रविष्ट कर लिया संस्कृत विद्यालय खोले। यह सब बातें संक्षेप में इसलिए बता दी कि आज जो भारत की स्थिति है वह पहले से परिवर्तित है अब भारत में स्वराज्य है भारतीयों का ही शासन है प्रजातंत्र है अपनी सुरक्षा व्यवस्था है अपनी सेना है किसी विदेशी का यहाँ हस्तक्षेप नहीं है विकास हो रहा है फिर भी समस्याओं का ढेर है।

आज गुरुडम वाद घर घर में अज्ञानता रूपी अंधेरे को फैला रहा है गुरुओं की संख्या दिन प्रतिदिन वृद्धि पर है आई जी पन्डा जो राधा बन लोगों को सत्य से दूर ले जा रहा है समाज को भ्रम जाल में डालने वाला पन्ड्या एक उच्च अधिकारी था सत्याचरण से जनता को सुधार सकता था अपने पद पर रहते हुए जनता पर ऐसी छाप डालता कि सभी को न्याय मिले पक्षपात न हो भ्रष्टाचार से बचता व बचाता जो दुष्ट व लुटेरे हैं उन पर दण्ड प्रक्रिया चला एक उदाहरण सबके सामने रखता। ऐसा व्यक्ति जब अपने पद पर रहते हुए कर्तव्यों का पालन न करे और पद का दुरुपयोग करे वह समाज व राष्ट्र को क्या दे सकता है अज्ञानता व मूर्खता को ही बढ़ावा देगा। हरियाणा में राम पाल अपने आप को भगवान बताने वाला भी आज कारागार की शोभा बढ़ा रहा है एक निर्मल बाना ऐसा

ही गुरु ऐसा ही चेला उसके पास भी ऐसे ही मूर्ख व अज्ञानी पहुंचते हैं और कोई कोठी मांगता कोई नौकरी कोई धन तो कोई अपने लिए पत्नी कोई स्त्री पति मांगती और कोई कार मांगता बाबा कहता कि कुत्ते को दो लड्डू खिला देना काम हो जाएगा। बटुआ खोलकर चौक में बैठना किसी को कहता कल सुबह पेट भर इस रस गुले खा लेना काम हो जाएगा घर के आगे दीपक जला देना। घोड़े को चने खिला देना आदि आदि, यह कोई शास्त्रोक्त बात नहीं ईश्वरोक्त नहीं मनुष्य को कार, कोठी, सोना, चांदी, परीक्षा में उत्तीर्ण होना श्रम व परिश्रम अर्थात् ये सब कर्म से मिलते हैं बैठे बैठे घोड़े को चने खिलाने से दरवाजे पर कार आकर खड़ी नहीं हो जाती बिना पुस्तक पढ़े अध्ययन किए कोई परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं हो जाता ऐसी बातों से जनता तो यही सोचेगी कि ऐसे ही सब कुछ मिल जाता है तो हम काम ही क्यों करें निकम्मी हो जाएगी।

मुम्बई में एक राधे माँ बन लोगों को जाल में फंसा रही है भीड़ एकत्र करने में लोगों को शिष्य बनाने में चतुर बड़ी चालाकी से जनता की आंखों में धूल झाँक रही है केवल देवी की भांति हाथ आशीर्वाद के लिए रखकर ही कोई महान विद्वान् व देवी नहीं बन जाती परन्तु हमारी जनता भी अजीब है जहाँ किसी को श्वेत वस्त्रों में या भगवा वस्त्रों में देखा आशीर्वाद का ढोंग करते देखा या ऊट पटांग झूठ बोल मनोकामना पूरी करने का ढोंग देख अज्ञानी लोगों की भीड़ लग जाती है और झट से गुरु मन्त्र लेने लगते हैं गुरु मन्त्र लेने या शिष्य बनने से कोई कार्य नहीं बनता गुरु भी तो ऐसे होते हैं जिन्होंने कभी आचरण अच्छा नहीं किया अन्दर से जिनके घोर अन्धकार है अज्ञानता भरी है।

आज गुरु कानों में मन्त्र फूंक रहे हैं नाम दान दे रहे हैं चर्चा कर रहे हैं सबकी अपनी-अपनी ढपली अपना-अपना राग प्रत्येक नगर में ग्राम में नए नए गुरु पाखण्ड फैला रहे हैं जनता भोली भाली है इनके जाल में फंस रही है वह निर्णय नहीं ले पाती कि सत्य क्या है असत्य क्या है आज समय आ गया है कि सत्य असत्य को जाने बिना किसी को गुरु न बनाबें सत्यासत्य आचार अनाचार का निर्णय तो विवेक द्वारा ही हो सकता है अतः वेद आदि शास्त्रों का जानना भी आवश्यक है।

एक दौर था जब स्वामी श्रद्धानन्द पं. लेखराम महात्मा हंसराज महात्मा अमर स्वामी कुँ. सुखलाल जैसे महान शास्त्रार्थियों, विद्वानों ने आर्य धर्म का क्रान्तिकारी प्रचार किया था तथा पाखण्डों व वेद विरोधियों से संघर्ष किए आज भी आर्य समाजों से वेद प्रचार की दुन्दुभि बजनी चाहिए। वेद प्रचार से ही अज्ञान रूपी अंधकार दूर किया जा सकता है।

शान्ति और क्रान्ति

♦डॉ. नरेन्द्र आहूजा 'विवेक' पंचकूला, हरियाणा

सामान्य लोक व्यवहार में शांति और क्रान्ति ये दोनों शब्द एक-दूसरे के विपरीतार्थक समझे जाते हैं। ऐसा माना जाता है जहाँ क्रान्ति हो वहाँ शांति नहीं हो सकती और जहाँ शांति हो वहाँ क्रान्ति का क्या काम। लेकिन प्रश्न उठता है कि क्या यही लोक प्रचलित अर्थ सही है और ये दोनों एक-दूसरे के विपरीतार्थक हैं। इसे समझने के लिए पहले हमें लोकप्रचलित अर्थों पर गहनता से विचार करना होगा और फिर उनकी तुलना संस्कृत व्याकरण के सही अर्थ से करनी होगी।

लोक व्यवहार में जब किसी की मृत्यु हो जाती है तो कहा जाता है कि अमुक व्यक्ति शांत हो गया अर्थात् शांति को मृत्यु के समानार्थक समझा जाता है और यदि कहीं कोई दंगा-फसाद, झगड़ा चल रहा हो तो उसे क्रान्ति माना जाता है। वर्तमान में आतंकवाद, नक्सलवाद, माओवाद जैसे सीरिया में आई.एस.आई.एस. की बर्बरता से लेकर कश्मीर में पत्थरबाजी तक को उनके समर्थक क्रान्ति के रूप में देखते हैं और वहीं दूसरी ओर इसके विरोधी इन आतंकी वारदातों को बंद करवा के शांति स्थापना की बात करते हैं। अब प्रश्न उठता है क्या यही सामान्य प्रचलित क्रान्ति और शांति है या इसके अर्थ इससे हटकर कुछ और हैं। इस प्रकार सामान्य प्रचलित अर्थों में शांति के उपरान्त क्रान्ति या क्रान्ति में शांति संभव प्रतीत नहीं होती। इसे समझने के लिए इनके संस्कृत व्याकरण शास्त्रों में दिए अर्थों को जानना होगा।

शमु धातु से क्तिन् प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिंग 'शान्ति' शब्द सिद्ध होता है। इसी प्रकार क्रमु धातु का क्तिन् प्रत्यय लगाकर 'क्रान्ति' शब्द है। 'शमु' शम् का अर्थ है 'उपशम्' या समन्वित होगा। 'क्रमु' क्रम का अर्थ है "पादविक्षेप" या आगे बढ़ना। इस प्रकार संस्कृत व्याकरण के अनुसार न तो शांति का अर्थ प्रगतिशून्यता है और न क्रान्ति का अर्थ तोड़-फोड़कर किसी चीज को अस्त व्यस्त करना है।

इसे और स्पष्ट रूप से समझने के लिए पहाड़ी नदी के तीव्र जल प्रवाहमान का उदाहरण लेते हैं। यदि तीव्र गति से प्रवाहमान पहाड़ी नदी का जल अपने निर्धारित मार्ग पर तटबंधों के बीच में चले तो वह ऊर्जा, बिजली सिंचाई के लिए पानी प्रदान करता है अर्थात् बंधे हुए मार्ग पर सुव्यवस्थित या समन्वित ढंग से चलना भी शांति का प्रतीक है तथा उससे प्राप्त ऊर्जा, बिजली, सिंचाई का

पानी आदि प्रगति की ओर ले जाने वाले क्रान्ति के प्रतीक हैं। इसके विपरीत यदि यही ऊर्जावान पहाड़ी नदी की जलधारा अपने मार्ग को छोड़कर बसी हुई आबादी के बीच में से निकलने लगती है तो हिमालयन सुनामी की तरह विनाश का कारण बनती है जिसे हम कदापि भी जल क्रान्ति की संज्ञा नहीं दे सकते।

अब इसे एक समाज के उदाहरण से समझें। कश्मीर में भ्रमित युवाओं द्वारा की जाने वाली पत्थरबाजी की घटनायें जो देश के लिए स्वीकार्य संविधान के प्रावधानों को तोड़कर की जा रही हैं या फिर जेएनयू जैसे विश्वविद्यालयों में देश-विरोधी नारेबाजी वैदिक साहित्य में दिए क्रान्ति के अन्तर्गत नहीं आती अपितु ये तो विघटनकारी विनाशालीला है। यदि युवा शक्ति उस पहाड़ी नदी के तीव्र गति से प्रवाहमान जल की तरह संविधान द्वारा स्थापित स्वीकार्य प्रावधानों के तटबंधों के अन्तर्गत रहकर चले और सुव्यवस्थित ढंग से निर्माण कार्यों में लगे तो निश्चित रूप से न केवल अपनी व्यक्तिगत अपितु सामाजिक, प्रादेशिक और राष्ट्रीय प्रगति में सहायक सिद्ध होगी और यदि समन्वित होकर शांतिपूर्वक किसी भी प्रगति की दिशा में एक साथ चल पड़े तो औद्योगिक या हरित या किसी भी क्रान्ति का सूत्रपात कर देगी।

किसी भी क्रान्ति अर्थात् एक दिशा विशेष में प्रगति से पूर्व उस क्रान्ति के अवयवों में शांति अर्थात् समन्वय होना अत्यंत आवश्यक होता है। यदि समन्वय ना हो अर्थात् व्यवस्था न बनाई जाए या शांति स्थापित न की जाए तो प्रगतिसूचक क्रान्ति भी संभव नहीं है। इसे एक और उदाहरण से समझने का प्रयास करते हैं। अव्यवस्थित भीड़ में मची भगदड़ जैसा अक्सर मेलों या मंदिरों में उत्सवों के बाद किसी भ्रम के कारण होता है वह विनाश ही लाती है और कई लोग इस भगदड़ में मारे जाते हैं। वही सेना की सुव्यवस्थित समन्वित छोटी सी टुकड़ी भी बड़े से बड़े संकट के समय सफलतापूर्वक बचाव का कार्य करती है जैसा सेना ने कश्मीर में आई बाढ़ के समय करके दिखला दिया।

इससे स्पष्ट हो जाता है कि हमें राष्ट्र में प्रगति के लिए शांति और क्रान्ति के सही अर्थों को समझना होगा और पहले समन्वय स्थापित करके शांतिपूर्वक किसी भी दिशा विशेष उद्योग, हरित व निर्माण आदि में कार्य करते हुए प्रगति के पथ पर आगे बढ़ते हुए क्रान्ति पैदा करनी होगी।

ओ३म्
“कृण्वन्तो विश्वमार्यम्”
सम्पूर्ण विश्व को आर्य बनाओ
“निमन्त्रण पत्र”

सोलहवाँ वार्षिक उत्सव गाँव मकेहड़

इस समारोह में आर्य जगत् के भजनोपदेशक शास्त्री रमेश कुमार आर्य, आर्य समाज साबुन बाजार लुधियाना एवं सूरज मैहता, जिला मण्डी (हि.प्र.) अपने मधुर संगीत उपदेश द्वारा अमृत वर्षा करेंगे तथा अन्य विद्वान् भी अपने ओजस्वी वक्तव्य द्वारा वेद प्रचार करेंगे।



श्रीमती नीला आर्या एवं ठाकुर बीरी सिंह आर्य

“आयोजक”

श्री बीरी सिंह आर्य भजनोपदेशक एवं धर्म पत्नी नीलां देवी आर्य,
गाँव मकेहड़, डा. चोलथरा, तह. सरकाघाट, जिला मण्डी (हि.प्र.)

विस्तृत कार्यक्रम

दिनांक २२ नवम्बर से २६ नवम्बर २०१६ तक

प्रातः गायत्री महायज्ञ व भजन.....८.०० से १०.०० बजे तक
भजन प्रवचन दोपहर.....१२.०० से ४.०० बजे तक
भजन प्रवचन रात्रि.....७.०० से ६.०० बजे तक
२७ नवम्बर २०१६ को परायण यज्ञ पूर्णाहुती आशीर्वाद भजन प्रवचन
प्रातः.....६.०० से ३.०० बजे तक

“ऋषिलिंगर ३.०० बजे से धूम धाम से मनाया जाएगा।”

अतः सभी से निवेदन है कि कार्यक्रमानुसार परिवार, मित्रों सहित आने की कृपा करें।

स्थान : यह समारोह हर वर्ष की भांति व्यक्तिगत
अपने घर गाँव मकेहड़ में बड़ी धूम धाम से मनाया जा रहा है।

शोक समाचार

बल्ह के गांधी एवं पूर्व मन्त्री स्व. पीरू राम चौधरी के दामाद मास्टर परस राम का गत दिनों हृदयगति रूक जाने से आकस्मिक निधन हो गया। वे एक मिलनसार, ईमानदार एवं मृदुभाषी व्यक्ति थे। आर्य वन्दना परिवार दिवंगत आत्मा की शांति और सदगति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करना है। दिवंगत के परिजनों को प्रभु इस दारुण दुःख को सहन करने की क्षमता एवं सामर्थ्य प्रदान करे।

—सम्पादक

सेवा में

बुक पोस्ट

भगवद् दर्शन

◆महात्मा आनन्द स्वामी

नारद मुनि एक बार घूमते-घूमते स्वर्ग में गए। वहाँ विष्णु महाराज विराजमान थे। उन्होंने पूछा, "सुनाओ मुनिराज! संसार का क्या हाल है?" नारद ने कहा, "महाराज, मैं तो आपसे पूछने लगा था कि आप कैसे भगवान् हैं। दुनियाँ में हर स्थान पर लोग आपको याद कर रहे हैं, स्थान-स्थान पर कीर्तन होते हैं, उपदेश होते हैं, मन्दिरों में आपकी पूजा होती है, लोग आपको पुकारते हैं और आप यहाँ निश्चिन्तता से बैठे हैं।" विष्णु महाराज ने कहा, "तू भोला है नारद! लोग मुझे नहीं चाहते, किसी और को चाहते हैं।" नारद ने कहा, "यह कैसे हो सकता है? मैंने तो देखा है कि वे आपके दर्शनों को बेचैन हैं। एक बार चलकर उन्हें दर्शन दे आइये।" विष्णु महाराज ने कहा, "नहीं नारद! वे लोग मेरा दर्शन नहीं चाहते। केवल कहने की बात है यह। यदि तुम्हें विश्वास न हो तो कुछ विमान ले जाओ। जो दर्शन करना चाहता है, उसे यहाँ ले आओ। मैं स्वर्ग के द्वार पर खड़ा रहूँगा, वे मेरे दर्शन कर सकेंगे।" नारद ने कुछ विमान लिये। एक नगर के बाहर उन्हें पृथ्वी पर उतार दिया। नगर में प्रविष्ट नहीं हुए (निश्चय ही वह करौलबाग में प्रविष्ट नहीं हुए, यहाँ तो बहुत से भक्त लोग रहते हैं)। एक स्थान पर गए। विचारने लगे किसको स्वर्ग चलने और भगवान् का दर्शन करने को कहें? सामने से कोई ४५ वर्ष के एक सज्जन आते हुए दृष्टिगोचर हुए। बार-बार भगवान् का नाम ले रहे थे। नारद ने सोचा, यह व्यक्ति है इसे ले चलता हूँ। बोले, "श्रीमान् जी! प्रभु का दर्शन करोगे? करना हो तो मेरे साथ आओ, मैं तुम्हें ईश्वर-दर्शन करा सकता हूँ।" उस व्यक्ति ने प्रसन्न होकर कहा, "प्रभु का दर्शन? प्रभु का दर्शन मिल जाये बाबा, तो और मुझे चाहिए क्या।" नारद बोले, "तो फिर आओ मेरे साथ। नगर के बाहर विमान खड़ा है, उसमें बैठो, मैं तुम्हें प्रभु के दर्शन कराऊँगा।"

वह व्यक्ति बोला, "मैं चलूँगा अवश्य, नारद जी! परन्तु आठ दिन के पश्चात् मेरे पुत्र का विवाह होने वाला है, वह हो जाये तो फिर अवश्य चलूँगा।" नारद महाराज आठ दिन के स्थान पर पन्द्रह दिन के पश्चात् आये; बोले, "तुम्हारे पुत्र का विवाह हो गया होगा?" वह बोला, "जी महाराज! आपकी कृपा से बहुत सुन्दर बहू मिली है। बहुत उत्तम रीति से विवाह हुआ।" नारद ने कहा, "तो आओ फिर चलें!" उसने कहा, "अभी-अभी तो विवाह हुआ है। बहू की गोद हरी हो जाये, एक बच्चा हो जाये तो फिर मैं अवश्य चलूँगा।" नारद बोला, "अच्छा यूँ ही सही।" एक वर्ष पश्चात् नारद फिर आये; बोले, "बच्चा हो गया भक्त जी?" भक्त जी बोले, "हाँ महाराज! बहुत सुन्दर बच्चा है, मोटी-मोटी आंखें हैं उसकी, बटर-बटर देखता है, मेरी अंगुली पकड़ लेता है।" नारद ने कहा, "तो आओ अब चलें!" भक्त ने कहा, "परन्तु अभी तो बच्चा बहुत छोटा है। उसे कुछ बड़ा हो लेने दो, फिर चलूँगा।" नारद 'बहुत अच्छा' कहकर चले गए। पाँच वर्ष पश्चात् फिर आये। बच्चा बड़ा हो गया था; बोले, "चलो भक्त, अब चलें।" भक्त ने कहा, "नहीं महाराज! अभी तो केवल पांच ही वर्ष का है। मेरा पुत्र है मूर्ख, उसकी देखभाल नहीं कर सकता। कुछ वर्ष और ठहर जाइये, इस बच्चे को बुद्धिमान् हो जाने दीजिये। नारद वापस चले गये; दस वर्ष पश्चात् पुनः आये। बच्चा जवान हो गया था, भक्त बूढ़ा। उसकी कमर टेढ़ी हो गई थी, आंखें बन्द, लाठी टेककर चलता था। नारद ने कहा, "अब तो चलो! अब तो बहुत विलम्ब हो गया।" बूढ़े भक्त ने चिल्लाकर कहा, "यह तुम बार-बार मेरे ही पास क्यों आते हो? इतना बड़ा संसार है, किसी दूसरे को पकड़कर ले आओ। क्या मैं ही स्वर्ग जाने के लिए रह गया हूँ?" नारद की आंखें खुल गई। दुःख से बोले, "भगवान् ठीक कहते थे उन्हें कोई नहीं चहता।"

साभार

श्री अरुणेश सूद, प्रधान, आर्य समाज भवारना, तह. पालमपुर, जिला कांगड़ा से ₹ ४०००, श्री अरुणेश सूद, गाँव व डा.भवारना, तह. पालमपुर, जिला कांगड़ा ने ₹ २०० की सहयोग राशि भेंट की। आर्य वन्दना परिवार इनका धन्यवाद व्यक्त करता है।